Impact Factor - 6.625 E-ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

July 2021

Special Issue 268

माध्यम लेखन में रोजगार के अवसर

विशेषांक संपादक
डॉ. पूनम बोरसे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
हरसूल, तह. त्र्यंबकेश्वर, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

July 2021

Special Issue 268

माध्यम लेखन में रोजगार के अवसर

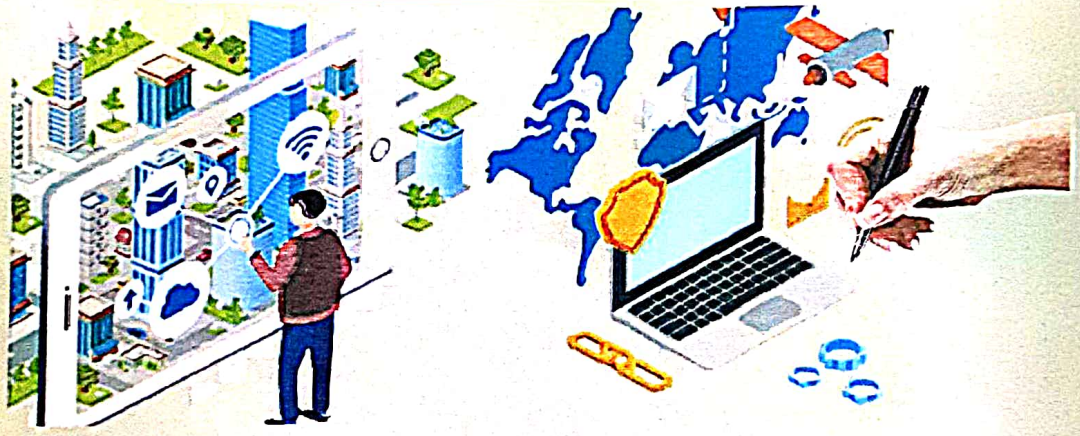

विशेषांक संपादक

डॉ. पूनम वोरसे

हिंदी विभागाध्यक्ष,

महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

हरसूल, तह. त्र्यंबकेश्वर, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
*	संपादकीय	डॉ. पूनम बोरसे	05
1	समाचार पत्रों में 'पृष्ठ सज्जा' की भूमिका	डॉ.जिभाऊ मोरे	06
2	फीचर लेखन की परिभाषा एवं अवधारणा	डॉ. रमा सिंह	08
3	मीडिया जगत् की नवीनतम विधा : फीचर	डॉ. अशोक मराठे	13
4	फीचर लेखन की परिभाषा और रेडियो फीचर	डॉ. निशाराणी देसाई	17
5	संचार क्रांति एवं सूचना प्रोद्योगिकी का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व	डॉ. गीता परमार	20
6	नव माध्यम : कंटेंट लेखन, ब्लॉग लेखन में रोजगार के अवसर	श्रीमती ज्योति	24
7	समाचार लेखन की भाषा-शैली	डॉ. सजित खांडेकर	29
8	समाचार लेखन एवं रोजगार के अवसर	प्रा. कैलास वच्छाव	33
9	फीचर लेखन : एक कला और विज्ञान	डॉ. मल्लिनाथ बिराजदार	36
10	समाचार पत्रों के स्वामित्व, प्रबंधन और मुद्रण में रोजगार के अवसर	डॉ.योगिता हिरे	40
11	फीचर लेखन : एक अवधारणा	डॉ. बबलू कुमार	44
12	संचार क्रांती एवं सूचना प्रौद्योगिकी का भविष्य	डॉ. विजयप्रकाश शर्मा	48
13	संचार क्रांती एवं सूचना प्रौद्योगिकी का भविष्य	डॉ. तृप्ती पटेल	52
14	प्रतिवेदन लेखन के प्रकार एवं उपयोगिता	डॉ. पूनम बोरसे	56
15	अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएँ	डॉ. यशोदा मेहरा	60
16	फीचर फिल्म लेखन के सामग्री संकलन स्त्रोत	डॉ. वाल्मीक सूर्यवंशी	65
17	विरासत पर्यटन के विकास में नवसंचार माध्यमों की भूमिका	डॉ. प्रणव देव	69
18	नवसंचार माध्यमों (न्यू मीडिया) का महिलाओं के प्रति दृष्टीकोण	डॉ. अर्चना द्विवेदी	77
19	अनुवाद का व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य	डॉ. गणेश शेकोकर	83
20	फीचर लेखन की अवधारणा और रोजगार की संभावनाएँ	डॉ. पोपट बिरारी	87
21	ऑनलाइन शिक्षा में रोजगार के अवसर	रामसिया चर्मकार	90
22	नव माध्यम - ब्लॉग लेखन	डॉ. योगिता घुमरे	96
23	फिचर लेखन की परिभाषा एवं अवधारणा	डॉ. जयश्री कुमावत	99
24	माध्यम लेखन : फीचर के विभिन्न प्रकार	डॉ. एम.पी.भवर	103
25	रेडियो फीचर का महत्त्व	डॉ. रघुनाथ वाकळे	108
26	फिचर लेखन का अर्थ, परिभाषा, स्वरुप एवं अवधारणा	युवराज गातवे	111
27	जनसंचार माध्यमों का समाज पर प्रभाव	डॉ. विष्णु राठोड	114
28	फीचर लेखन - एक कला	डॉ. शैलजा जायसवाल	118
29	बैंक, ई-बैंकिंग और भाषा	प्रा. शांताराम वळवी	120
30	फीचर : परिभाषा एवं अवधारणा	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	126
31	फीचर लेखन : स्वरूप तथा प्रकार	प्रा.दिपाली तांबे, डॉ.शरद शिरोळे	130
32	पृष्ठसज्जा के विविध अंग	प्रा. वृषाली वडगे	134
33	फीचर लेखन की परिभाषा और प्रकार	प्रा. समाधान गांगुर्डे	137
34	संचार क्रांति एवं सूचना प्रौद्योगिकी का भविष्य	प्रा.राजेंद्र जाधव	142
35	माध्यम विधा: एक परिचय	प्रा. राकेश वळवी, प्रा. संतोष पगार	145
36	प्रतिवेदन : अवधारणा, स्वरूप एवं महत्त्व	प्रो. अनिता नेरे, प्रा.अनिता राजबंशी	149

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 268 : माध्यम लेखन में रोजगार के अवसर
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
July- 2021

फीचर फिल्म लेखन के सामग्री संकलन स्त्रोत

प्रा. डॉ. वाल्मीक दशरथ सूर्यवंशी
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, निमगांव ता. मालेगांव जि. नाशिक (महाराष्ट्र)
मोबा. - ९४२१६०४६२४
इमेल — valmiksuryawanshi123@gmail.com

वर्तमान युग में मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय और व्यावसायिक माध्यम है फीचर फिल्म लेखन। यदपि आज केबल संस्कृति टी.वी. के माध्यम से घर-घर में प्रवेश कर गई है, तथापि उनकी लोकप्रियता में कोई कमी आई हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। फीचर फिल्म पर रंग का प्रभाव महत्वपूर्ण है। जव कभी भी कोई फीचर फिल्म बनायी जाती है तो उसके लिए एक स्पष्ट और संम्पूर्ण पटकथा की आवश्यकता होती है। यदपि पटकथा ही कही जाती है, परंतू यह अन्य सभी प्रकार की पटकथाओ जैसे - लघु फिल्मों की पटकथा, टेलीविजन व धारावाईक की पटकथा, विज्ञापन की पटकथा आदि से अलग होती है। इसे कई विद्वान एकमुश्त पटकथा भी कहते है। राजेंद्र पांडे के मतानुसार ''सिनेमा की पटकथ एकमुश्त होती है यानी वह टुटती नहीं। उसकी शुरुवात मध्य और अन्त से निश्चित होता है।''(१)

वास्तव में फिल्म लेखन एक कौशल्यपूर्ण कार्य है। वह एक ऐसी ऐन्द्रजालिक निर्माण प्रक्रिया है, जो अपने निर्माताओं से कुशलता की मॉग करती है। डॉ. सुशील सिध्दार्थ के शब्दों में ''फिल्म लेखन में उत्सुक व्यक्ति को प्रारंभिक चरण में ही यह समझ लेना चाहिए कि इस क्षेत्र में सैध्दांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक दक्षता का योग अत्यंत आवश्यक है। कारण यह है कि पॉच-दस पृष्ठ की कहानी या कल्पना को लंबी पटकथा में ढालने हेतू उसमें कतिपथ बातें जोडनी-घटानी पडती है। ऐसा करते समय परदा माध्यम के कई तदनों कों ध्यान में रखना पडता है।'' बजट, अभिनय, छायांकन, स्थान, वातावरण, दर्शकों की मानसिकता कों ध्यान में रखना पडता है। (२)

फीचर फिल्में सीरियलों से बिल्कुल अलग होती है। सीरियलों के पास ज्यादा समय होता है वही विज्ञापन और लघुफिल्मों के पास समय बहुत कम होता है। इस प्रकार फीचर फिल्मों के पास एक मानक समय होता है, की जीसमें एक स्पष्ट और सार्थक दृश्य कथा का प्रवाह निर्मित किया जा सके। अधिकांश फीचर फिल्म का शुध्द व्यावसायिक उद्देश्य होता है। इसके अतिरिक्त फीचर फिल्म के लेखन से पूर्व फिल्म के दर्शक वर्ग को तय करना आवश्यक होता है क्योंकि फिल्म का उद्देश्य है कि लोग उसे देखे।

इस प्रकार फीचर फिल्म लेखन के सैध्दांतिक स्तर पर लेखन करने की पध्दति है उसके उपर विचार करना महत्वपूर्ण है।

कथा विचार (Theme of the Story)

कहानी सार्थक घटनाक्रमों का एक संपूर्ण ढॉचा है। कहानी का निर्माण शोध व थीम के अनुसार होता है। डॉ. सुशील सिध्दार्थ के अनुसार ''वृक्ष के संदर्भ में जो स्थिति बीज की है, पटकथा के संदर्भ में वही स्थिति कथा विचार की है।'' (३) इसे ही लोगों ने सुविधानुसार 'धीम', 'आईडिया' या ''थॉट'' कहा है। प्रसिध्द कथा-पटकथा लेखक पंडित मुखराम शर्मा का कथन इस संदर्भ में विचारणीय है। उनके अनुसार ''फिल्म लेखन का जो तरीका मैं समझता हूँ-वह फिल्म की थीम से शुरु होता है।'' (४) इस 'विषय' तत्व की

पकड जिस लेखक को जितनी गहरी और सूक्ष्म होगी, लेखन उतना ही सुस्पष्ट और प्रभावशाली होगा। यह लेखक की अपनी रुचि योग्यता और प्रतिभा पर निर्भर है कि वह धार्मिक विषय चुने या ऐताहासिक सामाजिक विषय चुने या रहस्य रोमांचपूर्ण; हास्यप्रधान विषय चुने या राजनैतिक। वह जो भी विषय चुनेगा, वही विषय कथा-विचार की आधारशिला को पुष्ट करेगा।

संक्षिप्त कथा (Short Story) :

विषय को निर्धारण करने के उपरांत लेखन उसकी संक्षिप्त कथा बनता है। उसकी एक घटनाक्रम होती है, जिसके शब्दों के आधार पर संक्षिप्त कथा का सार लिखता है। ढाचा बनता है, प्रायः पॉच पृष्ठो में लेखक फिल्म के संपूर्ण घटना क्रम का सारांश प्रस्तुत करते हुए प्रमुख पात्रों के चरित्र के विकास तथा उनके अंतःसंबंध की प्रभावी रुपरेखा उपस्थित करता है। (५) अतः लेखक को चाहिए कि वह संक्षिप्त कथा को विधिवत प्रारुपित करने के लिए कहानी के महत्वपूर्ण बिंदूओं का समास शैली में प्रस्तुत करें।

कथा का विकास (Growth of Story)

वस्तुतः पटकथा लेखन एक यात्रा है, जिसकी शुरुवात विचार से होती है। फिर वह अनेक चरणों सें गुजरती हुई पटकथा रुपी मंजिल पर पहुँचती है। 'पट' शब्द का अर्थ 'दृश्य' से है। ये कॅमरे से फिल्मकार पर्दे पर दिखाये जाने के लिए लिखी हुई कथा है। (६) फिल्म का आदि - मध्य-अंत सुनिश्चित करता है और एक शीर्षक तय करता है, इसी चरण में वह गीत, नृत्य, मारधाड, उपकथा आदि की प्रकृति उनका स्थान और अनुपात निर्धारित करता है। (७) इसी बिंदू पर लेखक कथा का विकास करता है। इसी चरण में फिल्म से जुडे हुए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सुझावों-संशोधनों आदि को स्वीकार या अस्वीकार किया जाता है यही विकसित कथा पटकथा में संदर्भ को भॉति उपयोग में आती है।

पटकथा (Script) :

कहानी को अंतिम रुप दे दिए जाने के बाद उसकी पटकथा लिखी जाती है इसे 'स्क्रीन प्ले' या 'सिनेरियो' भी कहते है। पटकथा लेखन एक अत्यंत कठिन कार्य है कभी-कभी फिल्म की पटकथा पर विशेष परिश्रम किया जाता है तब भी फिल्म की संपूर्ण प्रस्तुति गडबडा जाती है। पटकथा लेखन के अंतर्गत ६०-८० दृश्यों के अंतर्गत संपूर्ण फिल्म लिखी जाती है। डॉ. अशोक चक्रधर पटकथा लेखन को थ्री टियर सिस्टम् मानते है। जिसमें लेखको - १) रिश्तों के मध्य होने वाली संवेदन-आदान-प्रदान की प्रक्रिया का ज्ञान २) व्यक्ति-मन के अंदर होने वाले अदृश्य द्वंद्वं को पकड पाने की क्षमता ओर ३) संवेदन और अंतर्द्वद्व को समाज के विभिन्न उपादानों के साथ विजुलाईज कर सकने की क्षमता हो। (८) निर्माता-निर्देशक के विचार-विर्मश से निम्नलिखित तथ्यों को सुनिश्चित करता है।

१) प्रस्तावित फिल्म की लंबाई क्या होगी?
२) दृश्यो की संख्या कितनी हो?
३) दृश्यों का क्रम-निर्धारण क्या होगा?
४) कहानी दिखाने की शैली क्या होगी?
५) दृश्य का प्रारंभ और अंत कहा और कैसे होगा?

कुल मिलाकर पटकथा लेखन का अपना एक व्याकरण होता है, जिसे समझना आवश्यक है। कहानी को ऐसे खूबसूरत तरीके से दर्शकों के सामने प्रस्तुत करना कि वह ढाई घंटे तक दर्शकों को बांध सके और

अपना औत्सुक्य बनाए रख सके, पटकथा लेखन का मूल माना जा सकता है। जहाँ पर दर्शक बोर होकर जम्हाई लेने लगे, समझो वही पटकथा फेल हो गई। (९)

फिल्म का प्रारंभ (Opening) :

किसी भी फिल्म का प्रारंभ सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। इसी से फिल्म का 'मूड' और 'टेम्परमिंट' तय होने लगता है। इसलिए लेखक विषयानुसार 'प्रारंभ' सुनिश्चित करता है। फीचर फिल्म की गति प्रकृति और महत्वपूर्ण पात्र का ध्यान रखता है। उसमें रोचकता और नवीनता का समावेश करता है। (१०)

नायक-नायिका और खलनायक का प्रवेश (Entry of Hero, Heroine and Villain) :

जब पहली बार पर्देपर हीरो का पदार्पण होता है तो हॉल तालियों से गूंज उठता है, हीरोईन आती हे तो वातावरण आनंद, श्रृंगार, उत्तेजना और उद्याम अनुभूति से भर उठता है तथा विलेन दिखता है तो दर्शक कुर्सियो पर संभलकर बैठ जाते है।

मूलकथा का बीजरोपण (Sowing of Basic Story) :

एक कुशल लेखक वही है जो प्रारंभ के पॉच दृश्यो में ही फिल्म की मुख्यधारा को सुनिश्चित कर लिया जाता है। गीतकार तथा प्रसिध्द पटकथा लेखक गुलजार का कथन या या उल्लेखनीय है। वे कहते है कि "जनमानसे में रचने-बसने और अपनी खुशबु निखरने में साहित्य को बहुत वक्त लगता है। उसकी पंखुडियों का सौंदर्य परत-दर-परत खुलता है। इसके विपरीत सिनेमा में गति है, जो भी कुछ कहना है, तीन घंटे के अंदर कह देना है और वह एक साथ सारे देश में लाखों दर्शको तक पहुँच, पसंद-नापंसद का फैसला करा डालता है।" इसलिए पटकथा में कहानी के शरीर के निर्माण के उपरांत आत्मा रोपकर अन्य गतिविधियों के लिए यज्ञाशीघ्र नियोजिन कर देना चाहिए।

चरित्र - संख्या पर नियंत्रण (Control on the Number of Characters) :

सुभाष घई कहते है कि फिल्म में मुख्य पात्रों की संख्या कम-से-कम होनी चाहिए क्योंकि प्रत्येक पात्र का परिचय भी कराना होता है और उसके होने को एक औचित्य तथा अंत भी दिखाना होता है। (११) अन्यथा पात्रों की भींड में कहानी और पात्रों का अंतः संबंध टूट जाता है। यह अंत संबंध तभी बन सकता है जब पात्रों की संख्या फिल्म में कम हो।

फिल्म का चरमोत्कर्ष (Climax) :

फिल्म का चरमोत्कर्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। अक्सर देखा गया है कि फिल्में चरमोत्कर्ष पर आते ही बिखर जाती है, और अपना प्रभाव खो देता है। फिल्म का अंतः मूलतः लेखक निर्देशक और विषय पर निर्भर करता है, वास्तव में लेखक को कहानी की मॉग व्यक्तिगत अभिरुचि और जनरुचि में सामंजस्य बिठाते हुए फिल्म का संपन्न परिणति अंकिते करनी चाहिए। एक बात और अंत को निरुपित करते हुए इतना 'स्पेस' तो रहे ही की दर्शक की कल्पना उसमें विचरण कर सके। (१२)

संवाद (Dialogue) :

संवाद फिल्म की जान होती है। संवाद की आवश्यकता उसी समय पडती है जब कलाकार अपने हाव-भाव से दृश्य की स्थिति को स्पष्ट नहीं कर पाता है। जैसे-जैसे फिल्म की शुटिंग हो जाती है, वैसे-वैसे ही संवाद लेखक संवाद तैयार करता रहता है। यह संवाद अक्सर लिखित पांडुलिपि के रुप में निर्देशक को एक या दो दिन पहले संवाद लेखक से मिलते है ताकि वे दृश्यों और संवादो का अध्ययन करके